(58)

पुरुषार्थ और परोपकार के प्रतीक—
श्री गंगाराम

(58)



लेखक :—
श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुरुषार्थ और परोपकार के प्रतीक—श्री गङ्गाराम

सन् १९२६ में कलकत्ता में साम्प्रदायिक विद्वेष ने बड़ा वीभत्स रूप धारण कर रखा था। नित्यप्रति अनेक निर्दोष व्यक्ति मौत के घाट उतारे जाते थे। राह चलते किसी के प्राण सुरक्षित न थे। उन्हीं दिनों उसी नगर में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था और उसमें राजनीतिक सुधारों से सम्बन्ध रखने वाले अनेकों प्रस्ताव पास किये जा रहे थे। यह दृश्य देखकर श्री गङ्गाराम से न रहा गया और उन्होंने अपने मित्र श्री मोतीलाल जी नेहरू को लिखा—"कलकत्ते में सैकड़ों व्यक्ति अपने प्राणों से हाथ धो रहे हैं और लोगों के घरबारों का सर्वनाश हो रहा है, उधर आप अपने व्यर्थ के प्रस्ताव कांग्रेस में पेश करने में लगे हैं। यदि आप में तनिक भी मानवता है तो कृपया आप फौरन कलकत्ता जाकर शांति स्थापन कराइये!"

पण्डित मोतीलाल जी नेहरू भला किसी का आक्षेप कब सुनने वाले थे। उन्होंने पत्रोत्तर में लिखा—"मैं आपसे केवल यही पूछना चाहता हूँ कि आप में इतनी मानवता होते हुए भी आप धन का ढेर लगाना छोड़कर स्वयं हिंदू-मुसलमानों को एक दूसरे की हत्या करने से क्यों नहीं रोकते?"

इस पत्र-व्यवहार को समाप्त करते हुए श्री गङ्गाराम ने लिखा—"जी हाँ, निस्सन्देह मैं धन का ढेर जमा कर रहा हूँ, किन्तु मेरा उपार्जित धन माँ के दूध के समान पवित्र है। यह धन आप वकीलों की तरह कलुषित नहीं है, जो मनुष्यों का खून चूसकर जमा करते हैं! मेरे प्यारे मोतीलाल! होश में आकर मेरे पास आओ। मैं तुम्हें लोगों के हृदय जीतने का उपाय बतलाऊँगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समस्त उत्पातों की जड़ है पेट की आग, जिसे केवल कृषि, उद्योग का निर्माण ही बुझा सकता है।"

यह था दो भारत के प्रसिद्ध महापुरुषों का शिक्षाप्रद पत्र-व्यवहार, जिसमें उन्होंने अपने-अपने ढंग से देश और समाज की सेवा करने के विचार व्यक्त किये थे। दोनों का उद्देश्य अपने दुरवस्था में पड़े देश-बन्धुओं की दशा में यथाशक्ति अधिक से अधिक सुधार करना था। पर जहाँ एक राजनीतिक अधिकार प्राप्त करके उनकी सहायता से देश की समस्याओं को हल करने के कार्यक्रम में लगा था, वहाँ दूसरा गरीब और कष्टपीड़ितों की प्रत्यक्ष सहायता करके, जितना बन सके उतने लोगों का उपकार करने में दत्तचित्त था। सरकारी इन्जीनियरिंग विभाग में लगभग ३० साल तक नौकरी करके उन्होंने अनेक जनहितकारी काम किये थे, और बाद में भारतीय-कृषि-उद्योग की प्रगति के लिये वर्षों तक प्रयत्न करते रहे। उनके उद्योग और विभिन्न प्रयोगों के फलस्वरूप उनकी और दूसरों की लाखों एकड़ जमीन में सिंचाई की व्यवस्था होकर अन्न का कई गुना उत्पादन होने लगा और हजारों व्यक्तियों को जीवन-निर्वाह का साधन मिलना सम्भव हो गया।

श्री गङ्गाराम जी ने कृषि-व्यवसाय द्वारा धन अवश्य कमाया था, पर साथ ही उसके द्वारा सदैव देश की भलाई करने की चेष्टा की। जब हिन्दू-विश्वविद्यालय के निर्माण में उनकी सहायता लेने महामना मालवीय जी आये तो उन्होंने बिना किसी प्रकार का पारिश्रमिक लिये समस्त इमारतों के निर्माण-कार्य में अपनी सेवायें ही अर्पित नहीं कीं, वरन् विद्यालय के भीतर एक नहर बनाने के लिये १ लाख रु० दानस्वरूप भी दिया। वे अपना धन अन्य अमीरों की भाँति तरह-तरह के शौकों में खर्च नहीं करते थे, वरन् स्वयं सदैव सादा जीवन व्यतीत करते हुये, उसका व्यय ऐसे ही कार्यों में करते थे जिससे अन्य दीन-दुःखी भाइयों की भलाई हो सके।

आरंभिक जीवन—

श्री गङ्गाराम जी के पिता एक साधारण स्थिति के वैश्य थे जो मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) की तरफ से किसी अच्छे रोजगार की तलाश में पत्नी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहित पैदल चलकर ही पंजाब आये थे। उनकी इच्छा खेती करने की थी, पर उसका कोई साधन न होने से उन्होंने अमृतसर के पास मंगतवाला स्थान में पुलिस की नौकरी करली और दस-बारह वर्ष तक उसी छोटे से स्थान में कार्य करते हुये अपनी स्थिति को सँभालते रहे। वहीं सन् १८५१ में श्री गङ्गाराम का जन्म हुआ। उनके जन्म के कुछ ही दिनों पश्चात् दौलतराम मंगतवाला को छोड़कर अमृतसर चले आये और वहाँ अदालत में नकल लिखने की नौकरी करली। इसमें भी उनका गुजारा साधारण रूप से हो जाता था।

इस प्रकार गरीबी की दशा में गङ्गाराम बढ़ने लगे और ४-५ वर्ष की आयु में घर के पास ही एक छोटे से स्कूल में पढ़ने को भेज दिये गये। पारिश्रम की आदत उनको अपने माँ-बाप से ही प्राप्त हो गई थी, इसलिये पढ़ाई का काम सन्तोषजनक रीति से चलने लगा। सन् १८६९ में वे मैट्रिक पास करके कालेज में दाखिल हुए। वहाँ दो वर्ष गणित की शिक्षा प्राप्त करके रुड़की के इन्जीनियरिंग कालेज में दाखिल हो गये। परीक्षाओं में विशेष योग्यता प्रदर्शित करने के कारण उनको ५० रु० मासिक छात्रवृत्ति मिलने लग गई थी। यद्यपि कालेज के अन्य लड़के बड़े अमीरी ठाठ से रहते थे, पर श्री गङ्गाराम को यह ५० रु० की रकम भी बहुत अधिक जान पड़ती थी, इसलिये अपना खर्च २५ रु० में चलाकर शेष २५ रु० अपने माता-पिता को भेज देते थे। उनकी ऐसी सुपात्रता और सच्चरित्रता देखकर माता-पिता ने अपने को कितना सौभाग्यवान माना होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं। सन् १८७३ में वे इन्जीनियरी की अन्तिम परीक्षा पास करके लाहौर में सहकारी इन्जीनियर के रूप में काम करने लग गये।

सरकारी नौकरी करते हुये भी श्री गङ्गाराम ने अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व के पालन का पूरा ध्यान रखा। उन्होंने जितनी इमारतें बनबाईं और अन्य निर्माण-कार्य किये उन सबमें सुन्दरता और मजबूती के साथ कम खर्च का भी ध्यान रखा। यही कारण है कि उन्होंने निर्माण-कार्य के सम्बन्ध जब जो नया तरीका सोचकर निकाला, वह लोकप्रिय हो गया और अन्य लोगों ने भी उसका अनुकरण किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे बहुत समय तक लाहौर के म्युनिस्पल कमिश्नर रहे और शहर की गन्दी सड़कों और गलियों की सफाई की तरफ ध्यान देकर शहर की बहुत उन्नति की। 'वाटर-वर्क्स' का निर्माण कराके पानी के निकास के लिये नालियों की उचित व्यवस्था की। लाहौर के निवासी इन कार्यों के लिये सदा उनकी प्रशंसा करते रहे।

यद्यपि उन्होंने नौकरी करते हुये अपना काम बड़ी ईमानदारी और परिश्रम से किया पर फिर भी उन्होंने देखा कि अँगरेज इन्जीनियर उनसे द्वेष ही रखते हैं और उनकी उन्नति तथा सम्मान को देखकर जलते हैं। उन लोगों ने जब कभी अवसर मिला इनकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध किया। जब ऐसे लोगों की चालें उनको बुरी जान पड़ीं तो कोशिश करके नौकरी से पेंशन ले ली।

वे चाहते थे कि पेंशन लेकर शांतिपूर्वक घर पर रहें और इन्जीनियर का कार्य निजी तौर पर करते रहेंगे। पर जैसे ही इनकी पेंशन मंजूर हुई कि तुरन्त ही इनके पास पटियाला रियासत से बुलावा आ गया। वहाँ पहुंच कर भी उन्होंने नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने के लिये कई योजनायें कार्यान्वित कीं। जन-कल्याण के और भी अनेक कार्य किये जिससे हजारों व्यक्तियों को सुख से जीवन निर्वाह करने का मार्ग मिल गया। इन कार्यों को देखकर पटियाला की प्रजा उनकी हृदय से भक्त बन गई। स्वयं वहाँ के महाराज भूपेन्द्रसिंह उनको 'चाचा' कहकर पुकारते थे।

विधवाओं के सहायक—

इस तरह श्री गङ्गाराम ने देश के औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में बड़े-बड़े काम किये जिससे जनता का बहुत कुछ कल्याण हुआ, पर हम जिस बात के लिये श्री गङ्गाराम का नाम याद करते हैं, और उनका उदाहरण दिखलाकर अन्य वैभवशाली लोगों को प्रेरणा देना चाहते हैं, वह है निराश्रय स्त्रियों तथा बेकार युवकों के लिये उनका सेवा-कार्य। संसार में मालदार होना कोई बड़ी बात नहीं, भारतवर्ष में ही इस समय ऐसे हजारों करोड़पति पड़े हैं जिनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाम कोई जानता भी नहीं। उनके पास कितना धन है और वे प्रतिवर्ष कितनी आमदनी करते हैं, इससे हमको क्या मतलब ? हमनो उसी की तारीफ कर सकते हैं जिसके धन से दूसरे लोगों का—गरीब और निराश्रित व्यक्तियों का भी लाभ होता हो। श्री गङ्गाराम ऐसे ही धनी व्यक्तियों में से थे।

श्री गङ्गाराम के मित्र बतलाते हैं कि यद्यपि वे ऊपर से बड़े क्रोधी, और रौबदाब वाले व्यक्ति प्रतीत होते थे, पर वास्तव में उनका हृदय बड़ा कोमल था। दीन-दुखियों की पुकार सुनने के लिये उनके कान हमेशा तैयार रहते थे। उन्होंने जब मौलाना हाली की 'मनाजात-ए-बेवगान' नामक कविता-पुस्तक पढ़ी तो उनका हृदय द्रवीभूत हो गया। वे उस कविता को बार-बार पढ़ते थे और अनेक बार तो भावावेश से उनकी आँखों से आँसू बहने लग जाते थे।

इसी भावना से प्रभावित होकर उन्होंने एक छोटी-सी 'विधवा विवाह सहायक सभा' सन् १९१४ में स्थापित कर दी थी। सन् १९१६ में अम्बाला में वैश्य कान्फरेंस हुई जिसमें लाला लाजपतराय और राय द्वारिकाप्रसाद जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल थे। श्री गङ्गाराम ने इस सभा में विधवा विवाह के प्रस्ताव को पास कराने की पूरी कोशिश की। पर पुरानी रूढ़ियों के पक्षपाती व्यक्तियों ने इसका विर धा और प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया। इस पर गङ्गाराम जी ने सुधारवादी सदस्यों को लेकर हिन्दू-हाल में एक पृथक सभा की और 'विधवा विवाह परिषद्' की स्थापना की। उन्होंने उसी समय दो हजार रु० दान देकर सभा का कार्य आरम्भ करने की व्यवस्था कर दी।

वे विधवाओं की करुण समस्या को हिन्दू-समाज के सर पर कलङ्क मानते थे और जब तक जिये बराबर इन 'अभागिनी नारियों' का उन्हें ध्यान रहा। वे स्वयं ही यह काम नहीं करते थे, वरन छोटे-बड़े सबको इसकी प्रेरणा देते रहते थे। एक बार इस सम्बन्ध में उन्होंने मालवीय जी को लिखा—

"आप मुझसे अपने 'बाल-विवाह-बिल' की प्रतिलिपि भेजने का बायदा करते ही चले आ रहे हैं। मुझे अब तक यह प्रतिलिपि नहीं मिली है। आपके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन के कुछ ही वर्ष शेष हैं। मेरी राय तो यह है कि आप बचे-खुचे दिन हिन्दू-समाज की उन्नति में लगा दें।"

जब मालवीय जी ने श्री गङ्गाराम की मृत्यु का समाचार सुना तो उनको इस बात का बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि उनके जीवन-काल में वे उस 'बाल-विवाह-बिल' को व्यवस्थापक सभा में पेश न करा सके। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा—

"विधवाओं की शोचनीय दशा देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठता था। वैसे उनका स्वभाव कड़ा था किन्तु बाल-विवाह की शिकार होने वाली अल्पायु विधवाओं का जिक्र आते ही उनकी आँखें भर आती थीं। बहुत समय से वे मुझ पर जोर डाल रहे थे कि कम से कम बारह वर्ष आयु वाली बालिकाओं के विवाह पर प्रतिबन्ध लगवा दूँ। इस विषय का प्रस्ताव मैं तैयार कर चुका हूँ और आशा है कि देहली-असेम्बली अगले अधिवेशन में वह रखा जायगा। पर अपने आदरणीय प्रिय बन्धु के जीते-जी मैं यह न करा सका।"

बाल-विधवाओं की भीषण समस्या—

सन् १९२६ में श्री गङ्गाराम जी ने, जब उनकी आयु ७५ वर्ष की हो चुकी थी और स्वास्थ्य भी निर्बल पड़ चुका था एक पुस्तिका छपाई थी, जिसके मुख-पृष्ठ (कवर) पर छपा था—

'हिन्दू-समाज में बाल-विवाह तथा बलात्-वैधव्य से पीड़ित अबलाओं की विशाल संख्या को देखकर किसका हृदय न पिघल उठेगा?" इतना बड़ा नाम उन्होंने इसीलिये रखा था कि लोग हाथ में लेते ही उसका आशय जान सकें। फिर इसी नाम के नीचे एक वाक्य और लिखा था—"होम-रूल की इच्छा करने से पहले अपने घरों को पवित्र कर लीजिये।" इससे प्रकट होता था कि वे राजनीतिक सुधारों से भी अधिक महत्त्व सामाजिक सुधारों को देते थे। उनकी सम्मति में जब तक हमारा समाज निर्बल और रूढ़िग्रस्त बना रहेगा, वह राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता और यदि किसी तरह वह राजनीतिक अधिकार प्राप्त करले तो भी वह उनसे पूरा लाभ उठा नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता। आज देश और समाज की दशा का अवलोकन करके उनकी बात में बहुत कुछ सचाई जान पड़ती है।

ऊपर जिस पुस्तिका का जिक्र किया गया है उसमें एक भी लेख न था, केवल देश में पाई जाने वाली विभिन्न आयु की विधवाओं की संख्या दी गई थी। ये आँकड़े सन् १९२१ की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट के थे। उसके अनुसार ४-५ वर्ष की आयु की विधवाओं की सख्या १५१३९ थी, इनमें १२००० हिंदू थीं। ५ से १० वर्ष के बीच की विधवायें १,०२,२९१ थीं और १० से १५ वर्ष के बीच की आयु वाली विधवाओं की सख्या २० लाख से अधिक थीं। इन अभागिनी बालिकाओं की उस समय कितनी अधिक दुर्दशा थी इसका वर्णन करते हुये उन्हीं दिनों मद्रास की 'लेजिस्लिटिव एसेम्बली' की भूतपूर्व उपसभापति डाक्टर श्रीमती मुत्थू लक्ष्मी रेड्डी ने कहा था—

"यदि अल्प आयु की किसी बालिका का (जिसने अपने भावी पति को न तो ठीक तरह देखा ही है, न उससे बातें की हैं और न वह बेचारी दाम्पत्य-जीवन का अर्थ समझती है) पति मर जाय तो क्या यह उसका दोष है? ध्यान रहे कि हिन्दू-समाज में बहुत छोटी आयु में ही विवाह की रस्में पूरी करके बालिका को मायके में ही रखा जाता है और कई वर्ष बाद वह पत्नी बनती है। तब क्यों उस बेचारी को सांसारिक सुखों से वंचित रखा जाता है? क्या यह यंत्रणादायक दण्ड उचित है? क्या हमारा समाज, जिसे अपनी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता पर गर्व है, विधवाओं के प्रति ऐसे घृणित व्यवहार को न्यायसंगत समझता है?

"पति की (जिसे बालिका के माता-पिता ने उसके सर पर मढ़ दिया है) मृत्यु होते ही बालिका बहिष्कृत कर दी जाती है। जिस घर में उसका लालन-पालन बड़े प्यार से किया गया था उसी घर में विधवा होने के बाद उसे दुर्भाग्य का अवतार समझा जाता है। उसे सदा ही अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता है। उसके लिये सांसारिक सुख निरर्थक हैं। यदि उसकी सधवा दादी, माँ, सास तथा अन्य निकट के सम्बन्धी भड़कीले वस्त्रादि पहिन कर घूमते हैं, तो अभागी बालिका को केवल सीधी-सादी सफेद धोती पहिनने की ही अनुमति दी जाती है। न तो वह आभूषण पहिन सकती है और न किसी उत्सव में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाग ले सकती है। घर के उत्सवों में तो उसे मुँह छिपाकर मकान के किसी निर्जन कोने में पड़ा रहना पड़ता है, जिससे उसकी अमंगलजनक छाया किसी अन्य पर न पड़ जाय।

"इस प्रकार लौकिक वातावरण में रहकर भी उसे संन्यासिनी का जीवन बिताने के लिये विवश किया जाता है। क्या बड़े से बड़े पापी को भी इससे बुरा दण्ड हम दे सकते हैं? किसी अन्य देश में अबलाओं के ऊपर ऐसे कठोर सामाजिक प्रतिबन्ध नहीं है। दो करोड़ नारियों को वैधव्य और यन्त्रणा की शृङ्खलाओं में आबद्ध रखकर हम स्वतन्त्र कैसे हो सकते हैं?"

श्री गङ्गाराम स्वयं भी इस समस्या पर विचार करके ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुँचे थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा था—"सर्वप्रथम सन् १९११ की जन-संख्या रिपोर्ट देखकर मेरा ध्यान विधवाओं की शोचनीय अवस्था की ओर आकर्षित हुआ। इस रिपोर्ट के अनुसार समस्त भारत में दो करोड़ साठ लाख विधवायें थीं, जिनमें से दो करोड़ एक लाख हिन्दू तथा शेष अन्य थीं। किसी भी अन्य देश में लोग बाल-विधवा शब्द से परिचित नहीं हैं किन्तु भारत में पन्द्रह लाख से कम आयु की पच्चीस लाख विधवायें हैं। बाल-विधवाओं के अस्तित्व के दो कारण हो सकते हैं। इनमें से प्रथम बाल-विवाह की रीति है, जिसके कारण बड़ी संख्या में बालिकाएँ विधवा हो जाती हैं। यह दोष अवश्य मिटाया जा सकता है, परन्तु ऐसी धारणा लोगों में फैल गई है, जिससे वे पुनर्विवाह करने को कदापि तैयार नहीं होते। यदि किसी कानून द्वारा पन्द्रह वर्ष के नीचे की बालिकाओं के विवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय तो हिन्दू-समाज की लाखों विधवाओं का उद्धार हो सकता है। विधवाओं की भयङ्कर स्थिति को देखकर मैंने प्राणपण से समाज के इस अङ्ग को सुधारने का निश्चय कर लिया और सन् १९१४ में 'विधवा विवाह परिषद' की स्थापना की।

"सर्वप्रथम हमने इस विषय में प्रकाशित साहित्य एकत्रित किया। सरकार की सहानुभूति हमारे साथ थी, क्योंकि सन् १८५६ में एक 'विधवा-विवाह-कानून' पास हो चुका था। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे शास्त्रज्ञ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारे पक्ष में थे, जो बंगवासी होकर विधवा-विवाह का प्रचार बड़े साहस से कर चुके थे।"

श्री गंगाराम के स्वर्गवास के दो-तीन वर्ष पश्चात् ही 'शारदा एक्ट' द्वारा १४ वर्ष से कम आयु की बालिकाओं के विवाह पर प्रतिबन्ध लगादिया गया। पर धन्य है हिंदू-समाज के कट्टरपन्थियों को कि आज उस कानून को पास हुए चालीस वर्ष बीत गये, पर अब भी ४-५ वर्ष की बालिकाओं के विवाह हजारों की संख्या में अवश्य कर रहे हैं। यदि श्री गंगाराम इस दृश्य को देखने के लिये जीवित रहते, तो न मालूम अपने इन देश-भाइयों की 'प्रशंसा' किन शब्दों में करते !

विधवा-विवाह सहायक सभा—

सन् १९१४ में इस संस्था की स्थापना 'पंजाब विधवा-विवाह सहायक सभा' के नाम से की गई और उसके कार्य-संचालन के लिये श्री गंगाराम जी ने ग्वालमण्डी (लाहौर) स्थिति अपनी एक इमारत दे दी, जिससे ९२ रुपया प्रति मास किराया आता था। सभा की कमेटी के सदस्य बड़े उत्साही थे और उनकी बैठकें नियमित रूप से हुआ करती थीं। सभा ने प्रण किया था कि उसके द्वारा प्रति दिन एक विधवा-विवाह तो कराया ही जायगा।

श्री गंगाराम का यह संकल्प पूरा हुआ पर संस्था का विकास समयानुसार ही हो सका। सन् १९१४ में केवल बारह विवाह कराये जा सके। १९-१६ में भी उनकी संख्या १३ से अधिक न हो सकी। पर जब लोगों को उनके कार्य का परिचय मिल गया और उसकी सचाई पर विश्वास हो गया तो सन् १९२० में विधवा-विवाहों की संख्या २२० और १९२२ में ४५३ तक पहुँच गई। इस प्रकार ८ वर्ष में उनका संकल्प कार्यरूप में परिणित हो सका। सन् १९३२ में इस संस्था द्वारा ५४९३ विधवा विवाह कराये गये और पिछले अठारह वर्षों की कुल सख्या ३९४६० थी।

जैसा कहा गया है आरम्भ में संस्था का कार्य श्री गंगाराम द्वारा प्रदत्त इमारत के ९२ रु० मासिक किराये से चलता रहा, पर १९२२ में अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जायदाद मिल जाने से प्रति मास एक हजार रुपया किराया आने लगा। इसके नियम बड़े सरल और जनता के लिये हितकर थे। वह न किसी धर्म या सम्प्रदाय पर आक्षेप करती थी और न कभी किसी से कोई फीस ली जाती थी। वह केवल विवाह योग्य विधवाओं की सूची अपनी पत्रिकाओं में प्रकाशित करती रहती थी। वर और वधू एक दूसरे से सन्तुष्ट होकर अपनी जाति की रीतियों के अनुसार विवाह कर सकते थे। दूसरी विशेषता यह थी कि इस सम्बन्ध में सभा की तरफ से समस्त पत्र-व्यवहार गोपनीय रखा जाता था।

धीरे धीरे संस्था का काम चारों तरफ फैल गया और उसके नाम से 'पंजाब' का शब्द निकाल कर उसे "अखिल भारतीय विधवा विवाह परिषद्" बना दिया गया। उस समय देश के ४२५ नगरों में सभा की शाखायें जोरों से काम कर रही थीं। लाहौर के प्रधान कार्यालय से हिंदी और उर्दू में 'विधवा-सहायक' और 'विधवा बन्धु' तथा अँगरेजी में 'विडोज काज' नामक तीन मासिक पत्र प्रकाशित किये जाते थे। विभिन्न भाषाओं में इस योजना का प्रचार करने के उद्देश्य से बहुत-सी पुस्तिकायें छपवा कर वितरित की गईं। इस प्रकार जहाँ पहले एक क्लर्क और एक चपरासी काम करते थे वहाँ १९२२ तक एक बड़ा दफ्तर स्थापित हो गया। सन् १९२२ में गंगाराम जी ने इस संस्था को चलाने के लिये एक ट्रस्ट कायम करके उसे काफी सम्पत्ति दे दी।

इस संस्था के कार्य में श्री गंगाराम को कितनी अधिक दिलचस्पी थी, इस सम्बन्ध में उनके एक परिचित सज्जन ने लिखा है—"वे स्वयं इसके कार्य की देख-रेख करते थे। गत कुछ वर्षों में सभा को एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई। उसका प्रचार ऐसी सुन्दर योजना के साथ किया गया कि कट्टर से कट्टर हिंदू भी उसका विरोध करने का साहस न कर सका। यह जानकर सन्तोष होता है कि यह सुधार पंजाब तक ही सीमित न रहा बल्कि मथुरा व हरिद्वार जैसे धार्मिक स्थलों तक भी फैल चुका है। इस सुधार से केवल अन्तरप्रांतीय एकता ही नहीं हुई है, वरन् अन्तर्जातीय विवाह का भी प्रचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गया है, जो कि भविष्य के लिये एक शुभ चिन्ह है। विधवाओं के यन्त्रणामय-जीवन में श्री गंगाराम ने सुख का सम्मिश्रण कर दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि विधवाओं की शुभ कामना से उनका भी कल्याण हो रहा है। एक बार सन् १९१५ में उनके एक मित्र उनके पास बैठे हुए थे। गंगाराम जी के चेहरे पर उदासी का भाव देखकर उन्होंने इसका कारण पूछा। गंगाराम जी ने कहा कि सब कुछ होते हुए भी भगवान ने उनको पोता नहीं दिया। मित्र ने कहा कि आप सत्कर्म कर रहे हैं, भगवान को कोई घूस नहीं दे रहे हैं। आप अपना काम करते रहें, बाकी उसकी इच्छा पर निर्भर है।

इसके बाद उनके पाँच पौत्र हुए। एक बार इङ्गलैंड में उनकी मोटर-कार दुर्घटना में चूर-चूर हो गई, किन्तु भगवान की अनुकम्पा से वे बाल-बाल बच गये। उस समय उन्होंने विधवा-सभा के मन्त्री को लिखा—"भगवान ने मुझे मौत के मुँह से बचा लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह मुझसे और कार्य कराना चाहता है। यदि यही ईश्वरेच्छा है तो तुम अपना काम मुस्तैदी से करते रहो।"

ऐसी ही एक घटना रेनाला में सिंचाई की मशीन लगाते समय हुई। वहाँ ८ लाख की लागत का एक सयंत्र लगाया गया किन्तु पूरा तैयार हो जाने पर भी वह काम न दे सका। कार्यकर्ताओं ने डरकर श्री गंगाराम के पास विलायत में खबर भेजी। यन्त्र की असफलता से एक बहुत बड़ी योजना का नाश हो जाता। वे उसी समय इङ्गलैंड का काम छोड़कर भारत के लिये रवाना हो गये। किन्तु उनके रेनाला पहुँचते ही उनके पुत्र सेवकराम ने यन्त्र को सुधार लिया और वह अच्छी तरह पानी फेंकने लगा। दर्शकों के मुँह से निकल पड़ा "धन्य हैं गंगाराम।" वे मुस्कुरा कर कहने लगे—"यह सब विधवाओं के आशीर्वाद का फल है!"

वास्तव में गंगाराम जी को यह आन्तरिक बिश्वास हो गया था कि उनके द्वारा जो सहस्रों विधवाओं के कष्टों में कमी की जा सकी है और वे सुखी गृहस्थ जीवन बिताने लगी हैं, उनकी शुभ कामनाओं से मेरा भी जीवन पवित्र हो रहा है और उसी के फलस्वरूप मुझे सब कामों में सफलता मिलती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहती है। अनेक अवसरों पर यह प्रकट भी हुआ कि विधवायें उनमें देवता के समान भक्ति रखती हैं।

हिन्दू-विधवाश्रम—

जब श्री गङ्गाराम ने विधवा-विवाह का कार्य प्रारम्भ किया तो उनके सम्मुख एक अन्य समस्या भी उत्पन्न हो गई। उनके पास सहायता के लिये अनेक ऐसी विधवाओं के भी पत्र आये जिनकी आयु अधिक हो गई थी अथवा जो कुरूप थीं और इसलिये उनका विवाह होना कठिन था। कुछ ऐसी भी थीं कि जिनके बच्चे थे, और कुछ धार्मिक कारणों से विवाह करना नापसन्द करती थीं। पर अपनी वर्तमान शोचनीय अवस्था के कारण वे सहायता की अधिकारिणी अवश्य थीं। ऐसी विधवाएँ प्रायः परिवार के साथ रहकर बड़े कष्ट और अपमान का जीवन बिताया करती हैं, और इस कारण उनकी सहायता करना बड़ा कठिन होता है।

श्री गंगाराम ने इस समस्या पर भली भाँति विचार करके, सबसे पहला उपाय यही निश्चित किया कि ऐसी स्त्रियों को परिवार के आश्रय से मुक्त करके स्वावलम्बी बनाया जाय। जब तक वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकने लायक न बनेंगी तब तक उनकी कठिनाइयों का अन्त नहीं हो सकता। इसलिये उन्होंने पंजाब सरकार के सामने एक प्रस्ताव रखा कि यदि सरकार उनके प्रस्तावित 'हिन्दू-विधवाश्रम' को नियमित आर्थिक सहायता देना स्वीकार करे तो वे उसके लिये अपनी ढाई लाख रुपये की एक इमारत देने को तैयार हैं। उनकी योजना थी कि इस आश्रम में विधवाओं को रखकर केवल आरंभिक शिक्षा ही न दी जाय वरन् उन्हें जे. वी. और जे. सी. की परीक्षा के लायक पढ़ाकर अध्यापिका बना दिया जाय। इसके साथ ही दूसरी योजना यह थी कि स्त्रियों को गृह-उद्योगों की शिक्षा देकर 'हस्तकला की शिक्षिका' बना दिया जाय।

जब सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तो सन् १९२१ में पंजाब के गवर्नर सर एडवर्ड मैकलेगन ने आश्रम का उद्घाटन किया। उस अवसर पर सरकार को इमारत भेंट करते हुए श्री गंगाराम ने कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"प्रत्येक मनुष्य नौकरी से अलग होकर कुछ न कुछ देश-सेवा करना चाहता है। मैं स्वयं कोई बुद्धिमान मनुष्य नहीं हूँ, क्योंकि जन्म भर मैं कुलियों से ही काम लेता रहा हूँ। इसलिये राजनैतिक उन्नति का काम दूसरों के लिये छोड़कर मैंने समाज-सुधार का निश्चय किया है। मेरी अल्पमति तो यही कहती है कि इस समय भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता समाज-सुधार ही है। 'विधवा-विवाह-सभा' का कार्य करते हुए मुझे अनुभव हुआ कि बीस वर्ष से अधिक आयु वाली विधवाओं से विवाह करने के लिये बहुत ही कम लोग तैयार होते हैं। अब हमारे सामने प्रश्न यह था कि ऐसी स्त्रियों को, जिनका विवाह किसी कारण नहीं हो सकता, या जो स्वयं विवाह के लिये तैयार नहीं हैं, किस प्रकार सहायता दी जाय ? यह कार्य व्यक्तिगत प्रयत्न से हल होने वाला नहीं है, इसलिये मैंने अपना प्रस्ताव सरकार के सामने रखा। प्रसन्नता का विषय है कि गवर्नर साहब और शिक्षा विभाग के अध्यक्ष ने उसे स्वीकार कर लिया है।"

गवर्नर साहब ने इस नवीन संस्था का परिचय देते हुए कहा—

"मैं और मेरा परिवार श्री गंगाराम से कई वर्षों से परिचित हैं। जीवन-मंच के नाटक में न जाने किस-किस रूप में वे भाग ले चुके हैं। हम जानते हैं कि बहुत वर्षों तक वे इन्जीनियर रहे, कभी वे दरबार का प्रबन्ध करने में जुटे रहे, तो कभी उन्होंने बड़ी-बड़ी जल-योजनाएँ बनाईं। कभी हम उन्हें कपास की मिलों के मालिक के रूप में देखते हैं, तो कभी 'कोल्ड स्टोरेज' का काम करते पाते हैं। वे इतने बड़े जमींदार हैं कि उनके सम्बन्ध में लेजिस्लेटिव एसेम्बली में प्रश्न पूछे जा रहे हैं। कई आदर्श फार्म और ग्रामों का उपक्रम आपने किया है। आर्थिक विषयों पर आपने कई सुन्दर लेख लिखे हैं। विधवाओं की समस्या का भी आपने बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है। आज हम उनको एक महान उपकारक के रूप में यहाँ देख रहे हैं। कुछ ही दिन पूर्व लाहौर में आपने एक चिकित्सालय का उद्घाटन किया था और आज इस उदार संस्था का श्रीगणेश कर रहे हैं। हमें आशा है कि इस संस्था से प्रांत की नारियों का कल्याण होगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' की एक संस्थापिका तथा प्रसिद्ध समाज-सुधारक श्रीमती मार्गरेट कजिन्स ने इस संस्था को देखकर लिखा था—"श्री गंगाराम द्वारा स्थापित महिला-आश्रम से मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। वहाँ का कार्यक्रम बड़े आदर्श ढङ्ग से चलाया जा रहा है। काश, यदि ऐसे ही उदार-स्वभाव 'गंगाराम' मेरे प्रांत (मद्रास) में भी होते तो वहाँ की स्त्रियों का कल्याण हो जाता। ऐसी ही एक संस्था की मद्रास में बड़ी आवश्यकता है। किन्तु क्या कभी गंगाराम या भडारकर जैसे दानी महानुभाव मद्रास में भी आयेंगे ?'.

महिलाओं के लिये इण्डस्ट्रियल स्कूल—

पर श्री गङ्गाराम जैसे कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों की समस्याओं का कभी अन्त नहीं होता। उनको एक कार्य में सहायता करते देखकर दूसरी तरह के जरूरतमन्द लोग भी उन्हीं की तरफ देखने लगते हैं। जब पढ़ सकने योग्य विधवाओं के लिये "महिला-आश्रम" कार्य करने लगा, तो एक दिन संस्था के एक कर्मचारी ने श्री गंगाराम से कहा कि "एक साधारण वेतन पाने वाले युवक की मृत्यु हो गई है और उसके पीछे उसकी पत्नी तथा माता के निर्वाह की समस्या बड़ी कठिन हो गई है।" उसने सुझाव दिया कि इस 'परिवार' की कुछ सहायता की जाय।

श्री गङ्गाराम—"किस प्रकार की सहायता ?"

कर्मचारी—"उसके परिवार को ४०-५० रु० दे दीजिये।"

श्री गङ्गाराम—"ये रुपये कितने दिन चलेंगे ?"

कर्मचारी इस प्रश्न का उत्तर न दे सका। वास्तव में उन दो निराश्रित विधवाओं की समस्या कठिन थी।

कुछ देर तक सोचकर श्री गंगाराम जी ने कहा—"अच्छा, तुम कल मालूम करके यह बताना कि वे स्त्रियाँ सिलाई की मशीन चला सकती हैं या नहीं ? जब यह मालूम हो गया कि वे सिलाई जानती हैं तो उन्होंने सिलाई की एक मशीन मँगवा कर उनके पास भिजवा दी। कुछ दिन बाद यह जान-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर कि उस मशीन की सहायता से वे दोनों स्त्रियाँ ५०-६० रुपया मासिक कमा लेती हैं, और उनका जीवन-निर्वाह भली प्रकार होने लगा है, गंगाराम जी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

इस उदाहरण से प्रोत्साहित होकर उन्होंने "लेडी मेनयार्ड इण्डस्ट्रियल स्कूल फार हिन्दू एण्ड सिख वीमन" की स्थापना की और उसके लिये अपनी एक इमारत, जिसकी कीमत एक लाख रुपया थी दान में दे दी। उसकी व्यवस्था और व्यय का भार पंजाब के 'डाइरैक्टर आफ इण्डस्ट्रीज' ने अपने ऊपर ले लिया। इस संस्था में स्त्रियों को सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, तिल्ले और गोटे का काम तथा कई अन्य हस्तकलाओं की शिक्षा दी जाती थी। उसमें संगीत शिक्षा का भी अच्छा प्रबन्ध था। एक या दो वर्ष की शिक्षा समाप्त हो जाने पर डाइरैक्टर द्वारा 'प्रमाण-पत्र' दिये जाते थे। स्कूल में शिक्षा मुफ्त दी जाती थी, और सब सामग्री भी बिना किसी मूल्य के मिलती थी। इस संस्था में शिक्षा प्राप्त की हुई अनेक महिलायें आगे चलकर अच्छी नौकरी प्राप्त करने में सफल हो सकीं।

यह भी प्रश्न उठाया गया कि काम सीखने वाली बालिकाओं और महिलाओं से अच्छा सामान बनवा कर उसे बेचा जाय और उसी की आमदनी से वे अपना निर्वाह कर सकें। इस उद्देश्य से श्री गंगाराम ने दो हजार रुपये अलग से दिये। इससे सामान खरीद कर काम करने वाली स्त्रियों को दिया जाता था और उनकी बनाई चीजों को एक दुकान में बेचकर नफा उनके हिसाब में जमा कर दिया जाता था।

इस प्रकार की कितनी ही छोटी-बड़ी योजनाओं से उन्होंने हजारों अभागिनी स्त्रियों के जीवन की कायापलट कर दी और उनके निकम्मे जन्म को सार्थक बना दिया। हम सब भी अकेले नहीं तो संगठित होकर इस प्रकार के कार्य अपने सीमित क्षेत्र में स्थापित कर सकते हैं। चाहे दूर से देखने वालों अथवा शुष्क तर्क करने वालों को इनका कुछ महत्त्व प्रतीत न हो पर जिन दस-बीस या सौ-पचास निराश्रित व्यक्तियों को उससे सहायता मिल जायगी और वे अपने जीवन-निर्वाह का कोई मार्ग पा जायेंगे, उनकी निगाह में उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काम का महत्त्व कितना होगा, यह विचारणीय है। श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का एक किस्सा प्रसिद्ध है कि उन्होंने एक दिन किसी लड़के को एक पैसा माँगने पर एक रुपया दे दिया, और कुछ काम करने की प्रेरणा दी। वह लड़का सच्चा था और उसने उसी एक रुपये से फल खरीदने-बेचने का कार्य करके कुछ दिनों में एक छोटी-सी दुकान कर ली। श्री गंगाराम ने बेकार और निराश्रित लोगों को किसी जीवन-निर्वाह योग्य रोजगार में लगाने की इतनी योजनायें प्रचलित कीं कि अनेक लोग भगवान से यही प्रार्थना करने लगे कि वह उनको दीर्घ जीवन दे, जिससे वह संकटग्रस्त नर-नारियों की सहायता करते रहें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गौरक्षा का वास्तविक मार्ग—

हमारे यहाँ 'गौरक्षा' का शोर अक्सर सुनने में आया करता है। अभी दो वर्ष पहले तो कुछ 'गौभक्तों' ने उसके नाम पर 'सत्याग्रह' आरम्भ करके देश भर में और विशेषत: दिल्ली में प्रचण्ड आन्दोलन खड़ा कर दिया था। उस समय मालूम होता था कि ये सज्जन गौरक्षा का अवश्य कोई ठोस कार्य कर दिखायेंगे। पर जैसे ही १९६७ का चुनाव समाप्त हुआ वह 'खेल' भी खत्म हो गया।

निस्सन्देह यह बड़े खेद की बात है कि गौरक्षा जैसे जनता के कल्याण के विषय को कुछ लोग अपने स्वार्थ की दृष्टि से कभी चलाते हैं और फिर बन्द कर देते हैं। जैसा हम जानते हैं दूध और घी ही अधिकांश हिन्दुओं के लिये हृष्ट-पुष्ट और शक्तिसम्पन्न बनाने के मुख्य साधन हैं। पर केवल गौरक्षा पर भाषण देने अथवा गऊ को माता कहकर उसकी पूजा कर देने मात्र से कोई लाभ नहीं हो सकता। उसकी पूजा तो यही है कि उसकी नस्ल का सुधार करके और खूब अच्छा खाना देकर उसे पुष्ट और दुधार बनाया जाय। अगर वह भैंस की तरह दस-बारह सेर दूध के आधार पर सात-आठ सौ रुपये में बिकने लगे तो कोई ऐसा मूर्ख न होगा जो उसे सौ-पचास रु० के माँस, खाल आदि के लिये काटे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री गंगाराम इस तथ्य को खूब अच्छी तरह समझते थे, साथ ही वे एक धार्मिक हिन्दू और गोभक्त भी थे। वे समय-समय पर ऐसी योजनायें सोचा करते थे जिनसे देश के गोधन की वास्तविक अर्थों में वृद्धि हो और उसकी उपयोगिता अधिक से अधिक बढ़ सके। एक बार इस सम्बन्ध में आपने महात्मा गाँधी को लिखा था—

"आपने बी० बी० सी० आई० रेलवे से बम्बई-देहली यात्रा करते समय बीच का व्यर्थ पड़ा हुआ ५०० मील लम्बा और २० मील चौड़ा क्षेत्र तो देखा ही होगा। बरसात में तो यहाँ एक विशाल जलराशि बन जाती है। क्या आपने कभी यह सोचा है कि इतना अधिक पानी बाढ़ के रूप में व्यर्थ समुद्र में पहुँच जाता है। हम प्रकृति के इस तोहफे का उचित लाभ न उठाकर उसे बर्बाद होने देते हैं। यदि इस भूमि को हलों या 'ट्रेक्टरों' से केवल काट दिया जाता, तो उसके ऊपर खूब घना व हरा-भरा घास व झाड़ियों का जंगल बन जाता। मवेशियों के चरागाह के लिये यह एक सुन्दर स्थान बन सकता है। मैं इस विषय में आपकी राय चाहता हूँ। और भी कई अन्य विषयों में मैं आपकी राय चाहता हूँ, जिससे हमारे जनपद की धन-सम्पत्ति में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है। मेरी धृष्टता के लिये आप मुझे क्षमा करें, किन्तु मेरी समझ में तो हमारे भविष्य का राजनीतिक स्वराज्य इन्हीं चीजों पर निर्भर है।"

गाँधी जी और श्री गंगाराम में कितने ही दिन तक यह पत्र-व्यवहार होता रहा। वे एक-दूसरे को अपने दृष्टिकोण से प्रभावित करने को सदा सचेष्ट रहते थे। गंगाराम जी ठीक ही सोचते थे कि यदि महात्मा गाँधी उनके विचारों में ढल जायें, तो वे अवश्य ही भारत का पुनर्निर्माण करने में सफल हो सकते हैं। इसलिये मवेशियों के चरागाह की चर्चा करते हुये आपने गौपालन के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये—

"मिल्क डेरी की आजकल हर जगह चर्चा है, पर हर प्रांत में हिन्दू-मुसलमानों के लिये यह लाभदायक धन्धा नहीं हो सकता। वास्तव में मवेशियों की समस्या हमारे देश के कल्याण की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है। क्या आपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गोहत्या के प्रश्न पर कभी इस दृष्टिकोण से विचार किया है कि 'भेड़-बकरियों' की अपेक्षा गायें अधिक क्यों काटी जाती हैं ? मेरा उत्तर यह है कि गाय के माँस को सस्ते दामों पर बेचने पर भी कसाई को अधिक लाभ होता है, क्योंकि केवल खाल, सींग और खुरों से ही उसको काफी आमदनी हो जाती है। चूँकि कसाइयों को गायें सस्ती मिल जाती हैं, इसी कारण गायें मारने में इनको लाभ हो जाता है।"

"अपने बच्चों के लिये या अपने लिये ताजा दूध पाने की इच्छा से लोग गायें खरीदते हैं और जब गायें दूध देना बन्द कर देती हैं तो शहरों में उनका भरण-पोषण करना कठिन हो जाता है। साधारणतया एक गाय एक रुपये का दाना तो प्रतिदिन खा ही जाती है। इसलिये गोरक्षा का केवल एक उपाय है कि सरकार सूखी गायों को पालने के लिये कुछ अच्छी भूमि दे, जिसका प्रबन्ध किसी छोटी संस्था के हाथों में हो। गाय के मालिक को उसके भरण-पोषण के लिये केवल दस रुपये के लगभग खर्चा बैठेगा (यह ४५ वर्ष पहले की बात है जब खाद्य वस्तुओं के भाव अबसे बहुत सस्ते थे)। तब कोई भी हिन्दू या मुसलमान दुधारु गाय को नहीं बेचेगा। तब गो-माँस खाने वालों को उसका इतना दाम देना पड़ेगा कि वे उसे खरीदना बन्द कर देंगे।"

आगे चलकर गंगाराम जी ने बतलाया कि धर्म अथवा भावुकता के आधार पर सरकार से गोरक्षा के लिये सहायता माँगने का कोई परिणाम न होगा। यह तो एक शुद्ध आर्थिक प्रश्न है, अगर आप इसको जन-जीवन के लिये पूर्ण उपयोगिता सिद्ध कर सकें तो सरकार को स्वयं झुकना पड़ेगा। उन्होंने स्वयं अपना अनुभव बतलाते हुये कहा—

"उन दिनों मैं लाहौर में था। मेरी भेंट रैली ब्रादर्स के प्रतिनिधि से हुई और मालूम हुआ कि वह खाल और चमड़े खरीदने में व्यस्त था। उसने मुझे बताया कि खालों का दाम ३३ रुपये से बढ़कर ७२ रुपया हो गया है और सींगों तथा खुरों का भाव भी बहुत तेज है।

मैंने सावधानी से गाय-बैलों के प्रत्येक अङ्ग के वजन और मूल्यों का हिसाब लगाकर देखा तो ज्ञात हुआ कि ६० रु० प्रति गाय या बैल का मूल्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देकर भी कसाई को काफी फायदा रहता है। मैं तत्काल ही अपने मित्र सर टामस हालैण्ड के पास गया, जो 'म्युनिसिपल बोर्ड' के अध्यक्ष थे। मैंने कहा कि यदि इसी प्रकार से गाय-बैल कटते रहे तो खेती के लिये देश में बैल मिलेंगे भी नहीं। मेरे हिसाब को देखकर वे मुझसे सहमत हो गये और उन्होंने अपने विभाग को गाय-बैलों की खालों के मूल्य को पुनः ७२ से ३६ पर लाने की आज्ञा दे दी।

"तत्काल बाजार मंदा पड़ गया। रैली का आदमी तत्काल मेरे पास आकर कहने लगा—"श्रीमान्! यह आपने क्या कर दिया? अब तो हमें खरीदा हुआ माल बेचना भी कठिन हो गया है। बाजार में खाल-चमड़ों की माँग समाप्त हो चुकी है।" इस घटना से आप देख सकते हैं कि किस प्रत्यक्ष ढङ्ग से गायों को बचाया जा सकता है।"

श्री गंगाराम सभी विषयों में देश के प्रत्यक्ष लाभ और तर्क संगतता की दृष्टि से विचार करते थे। इसलिये गांधी जी से पत्र-व्यवहार करते हुए जब चरखे का जिक्र आया तो वे उनसे जरा भी सहमत न हो सके। उनका मशीनों की उपयोगिता पर अटल विश्वास था। उनका कहना था कि "देश के राजनैतिक उद्धार का समस्त प्रश्न देशवासियों के पेट से संयुक्त है, जो इस समय भूखा है। इसलिये संपूर्ण समस्या का एक ही उपाय है, वह है देश का औद्योगीकरण।"

यद्यपि श्री गंगाराम का कथन प्रत्यक्ष प्रमाणों पर आधारित था और आज ४० वर्ष बाद भारत की राष्ट्रीय सरकार उसी औद्योगीकरण की नीति पर चल रही है, पर उस समय तो राजनीतिक कारणों से चर्खे की धूम थी। गंगाराम जी ने इसको न मान कर महात्मा जी को लिखा—

"मेरी समझ में तो चरखे से कोई लाभ नहीं हो सकता, हाँ, बुनाई अवश्य लाभप्रद हो सकती है। दिन भर चरखा चला कर भी डेढ़ आना से अधिक की आमदनी नहीं हो सकती। इतनी छोटी कमाई के लिये कौन दिन भर परिश्रम करने को तैयार होगा? मैंने लाहौर में स्त्रियों और बालिकाओं के लिये एक औद्योगिक पाठशाला खोल रखी है, जहाँ एक वर्ष सीख कर कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी स्त्री एक रुपया प्रतिदिन कमा सकती है। यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ। हमारी पाठशाला में एक लड़की तो एक साल कढ़ाई का काम सीख कर तीन-चार रुपया रोज कमाने योग्य हो गई है। उसे तीन-चार रुपया कमाने के लिये दिन भर में केवल ५-६ घण्टा काम करना पड़ेगा। अब आप बताइये कि दिन भर चरखा चलाना कौन पसन्द करेगा? हाथ की कताई मशीन की स्पर्द्धा नहीं कर सकती। चरखे जैसी अन्य कई मशीनें हैं जो लोगों को फालतू समय में अधिक लाभ दे सकती हैं।

"पण्डित मदनमोहन मालवीय आजकल यहीं हैं और मेरे विचारों से सहमत हैं। मैं उन्हें विश्वास दिला चुका हूँ कि मशीन के आगे चरखे की सुस्त चाल कुछ भी नहीं है। मशीन द्वारा मामूली कारीगर भी आठ आना से एक रुपया तक प्रतिदिन अवश्य कमा सकता है। आप कह सकते हैं कि बरसात में ८५ प्रतिशत से भी अधिक किसान खाली रहते हैं, जो चरखा चला सकते हैं, पर ये ही किसान खाली समय में यदि भेड़ पालने का काम करें तो बहुत अधिक लाभ उठा सकते हैं।"

गाँधी जी के साथ श्री गंगाराम का यह विवाद इस बात का परिचायक है कि उनको अपने निर्धन और आजीविका विहीन देशवासियों की कितनी चिन्ता रहती थी। उन दिनों महात्मा गाँधी देश भर में ईश्वर की तरह पूजे जाते थे और उनके प्रभाव का मुकाबला कर सकने की सामर्थ्य किसी में न थी। तो भी इस बात से हतोत्साह न होकर वे गाँधी जी को बराबर वह मार्ग सुझाते रहे जो उनकी निगाह में ठीक और देश के लिये कल्याणकारी था। उन्होंने किसी बात की चिन्ता न करके गाँधी जी को स्पष्ट शब्दों में लिखा—"मेरी समझ में आप अवश्य कल्पना-लोक में विचरते हैं। आपकी बातों को सुनकर मेरी प्रबल इच्छा थी कि आपसे मिलकर आपके मन से पुराने विचार दूर करने का प्रयत्न करूँ और जन-कल्याण के लिये धन कमाने का उचित और आधुनिक ढङ्ग समझाऊँ। कताई की पुरानी प्रणाली के पक्ष में मैं नहीं हूँ।"

गाँधी जी ने भी श्री गंगाराम की जन-कल्याण की भावना की सरा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हना की और लिखा—"मुझे मालूम है कि आप भी मेरी ही भाँति एक पवित्र ध्येय से प्रोत्साहित हैं, भले ही आपकी भाषा कुछ और है। यद्यपि आप शिखर से उतर कर जड़ पर पहुँचने का असम्भव काम कर रहे हैं, तो भी आपके और मेरे उद्देश्यों में अन्तर नहीं, और वह उद्देश्य है 'जन-सेवा'।"

सन् १९२७ में इङ्गलैंड जाते समय वे महात्मा गाँधी से मिले और साबरमती के सन्त के विचारों को बदलने का निरन्तर प्रयत्न करते रहे। यद्यपि वे और गांधी जी कताई के सम्बन्ध में एकमत न हो सके, पर जब इङ्गलैंड से उनकी आकस्मिक मृत्यु का समाचार आया तो महात्मा जी ने अपने 'यंग इण्डिया' पत्र में लिखा—

"मुझे ला० गङ्गाराम से मिलने का सौभाग्य हाल ही में मिला था। यद्यपि कई विषयों में उनके हमारे विचार भिन्न थे, तो भी मैं उन्हें एक सच्चा सुधारक और महान कार्यकर्ता समझता था। यद्यपि कई बार मैंने उनके दृष्टिकोण का खण्डन किया, पर वे मुझे एक छोटा बालक ही समझते थे। उनका मुझ पर स्नेह था, मेरे विरुद्ध खड़े होकर उन्होंने भारतीय दरिद्रता पर अपूर्व प्रकाश डाला। भारत छोड़ने के पहले मैंने उन्हें लिखकर आश्वासन दिया था कि मैं उन्हें चरखे का अनुयायी बनाकर छोड़ूँगा, जिसे वे चूल्हे में जलाने की लकड़ी के रूप में ही देखते थे। इसलिये पाठक मेरे दुःख का अनुमान लगा सकते हैं। किन्तु ऐसी मृत्यु भाग्य से मिलती है। वे किसी शौक के लिये इङ्गलैंड नहीं गये, पर वे अपने सुनिश्चित कर्तव्य की पुकार को टाल न सके। इस भाँति उनकी मृत्यु कर्तव्य-क्षेत्र में हुई है। भारतमाता को भी गङ्गाराम जैसे सपूतों पर गर्व है।"

कर्मवीर और परोपकारी व्यक्तियों का सम्मान सभी करते हैं। फिर जो मतभेद सत्य के आधार पर होता है उसका परिणाम कभी कटुतापूर्ण नहीं होता, वह मंगलजनक ही सिद्ध होता है।

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'—

इसमें सन्देह नहीं कि श्री गङ्गाराम एक कुशल व्यापारी और जमींदार थे और उन्होंने अपने उद्योग और परिश्रम से पर्याप्त सम्पति उपार्जित की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर उन्होंने इस सम्पत्ति का एक बड़ा भाग (लगभग तीस लाख रुपया) अपने जीवन-काल में ही दान देकर अनेक परोपकारी संस्थाओं की स्थापना की। उनकी विधवा और असमर्थ स्त्रियों से सम्बन्धित संस्थाओं का जिक्र तो ऊपर किया जा चुका है, पर श्री गङ्गाराम की परोपकारिता का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था। वे देश की सभी त्रुटियों को देखते रहते थे और जब जिस काम को करने का अवसर मिल जाता उसी में सहयोग देकर देशोन्नति के लिये प्रयत्न करते थे।

इसका एक कारण यह भी था कि स्वयं उनका जीवन गरीबी और कठिनाइयों से संघर्ष करते हुये आरम्भ हुआ था। इसलिये वे प्रत्येक ऐसे बेकार युवक के कष्टों और विपत्तियों को तुरन्त समझ लेते थे जो किसी जीवन निर्वाह के साधन की खोज में इधर-उधर ठोकर खा रहा हो। वह चाहे किसान हो, चाहे अछूत हो और चाहे स्कूल या कालेज से निकल कर नौकरी की खोज करने वाला। ऐसा जो कोई व्यक्ति जब कभी उनके सम्पर्क में आता तो उनको स्वयं अपने पुराने जीवन की याद आ जाती और वे हर तरह से उसकी सहायता करने को तैयार हो जाते।

इस प्रकार के अवसर उनके बहुधन्धी और व्यस्त जीवन में प्रतिदिन ही आते रहते थे और उन्होंने इस प्रकार एक-एक करके भी जितने लोगों को रोजगार धन्धे से लगा दिया उनकी संख्या गिन सकना कठिन है। जिन व्यक्तियों के लिये अधिक आयु अथवा अन्य परिस्थितियों के कारण अपना निर्वाह स्वयं कर सकना सम्भव न था उनके लिये वे आर्थिक सहायता भी देते रहते थे। यही कारण था कि जिस समय देहावसान होने के पश्चात् उनकी चिता-भस्म हरिद्वार में जलूस के रूप में ले जाई जा रही थी, तो हजारों स्त्रियाँ और विधवाएँ रोती-बिलखती भस्म की पालकी पर फूल बरसा रही थीं और सहस्रों कण्ठों से 'गरीबों के वली की जय', 'विधवाओं के सहारे की जय', 'पंजाबी हातिमताई की जय' आदि के नारों से समस्त वातावरण गूँज रहा था।

आपने एक बार अपने मित्र और पुराने सहयोगी—राजा ज्वालाप्रसाद को, जो उस समय उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च इन्जीनियर थे, लिखा—"साथ में एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभागे का पत्र भेज रहा हूँ। जरा देखिये कि कैसा विचित्र समय आ गया है। यह युवक गणित में एम० ए० पास कर चुका है, फिर भी बेचारे को रोटी के एक टुकड़े के लिये दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं। मानवता के नाते, यदि आप इसके लिये कुछ कर सकते हों तो अवश्य करें।" इस तरह के सहायता के अधिकारी हमेशा ही आपके पास पहुँचते रहते थे और आप भी उनके साथ कोरी समवेदना प्रकट न करके उनके लिये कोई न कोई काम ढूँढ़ा करते थे। उन्होंने अपनी इसी प्रवृत्ति का स्पष्टीकरण करते हुये एक उदाहरण बतलाया—"मैंने एक बार एक पढ़े-लिखे नवयुवक को हिन्दू नानबाई (डबल रोटी, बिस्कुट बनाने वाला) की दुकान खोलने की सलाह दी। बहुत से हिन्दू डबल रोटी, बिस्कुट आदि को पसन्द करते हुये भी उन्हें मुसलमान या योरोपियनों की दुकान से नहीं खरीद सकते। उस नवयुवक ने मेरी बात मान ली और आज उसका व्यापार जोर-शोर से चल रहा है।"

जब इस प्रकार के युवकों की संख्या बहुत हो गई तो उन्होंने ऐसी बहुत-सी पुस्तकें इकट्ठी कीं, जिनमें बतलाया गया था कि सीमित पूँजी वाले लोग किस प्रकार जीविका उपार्जन कर सकते हैं। वे युवकों से कहते थे कि उनकी लाइब्रेरी में आकर उन पुस्तकों का अध्ययन करें और उनमें से अपनी रुचि और परिस्थिति के अनुकूल कोई मार्ग खोजें। उन्होंने अपने एक कर्मचारी को इसलिये नियुक्त कर रखा था कि वह हर रोज तमाम अखबारों से नौकरियों के विज्ञापन काटकर एक बोर्ड पर चिपका दिया करे। इस सरल ढंग से हजारों लोग अपने लायक काम की सूचना पाकर रोजगार से लग चुके हैं। आगे चलकर उन्होंने इस कार्य को व्यवस्थित रूप दे दिया जिसका नाम था—"सर गङ्गाराम बिजनैस ब्यूरो एण्ड लाइब्रेरी।" यह संस्था नवयुवकों को हर तरह के जीविकोपार्जन के कार्यों लिये प्रोत्साहन करती रहती थी और आधुनिक औद्योगिक, व्यापारिक तथा व्यावसायिक विकास और सम्भावनाओं की सूचना देती रहती थी। ब्यूरो की तरफ से प्रति सप्ताह एक सभा का आयोजन भी किया जाता था जिसमें रोजगार ढूँढ़ने वाले नवयुवकों से विचार-विमर्श करके उनकी कठिनाइयों को हल करने का उपाय सुझाया जाता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर श्री गङ्गाराम यहीं पर नहीं रुके। उनका स्वभाव था कि जिस काम को हाथ में लेना उसकी जड़ तक पहुँच जाना। इसलिये जिस प्रकार आश्रयहीन स्त्रियों की समस्या में हाथ डालने पर उन्होंने एक के बाद एक कई संस्थाएँ स्थापित कीं और उनके द्वारा प्रत्येक स्तर की अभावग्रस्त महिला की सहायता का साधन प्रस्तुत किया, उसी प्रकार बेकार शिक्षित युवकों की सहायता करते-करते वे नई-नई संस्थाओं की योजना बनाते चले गये। जब उनके 'बिजनैस ब्यूरो' द्वारा इस प्रकार के युवकों से विचार-विमर्श किया जाता था, तो उनकी स्थिति का अध्ययन करते-करते उनके मन में यह भी विचार आया कि आजकल की शिक्षा संस्थाओं का पाठ्यक्रम ऐसा त्रुटिपूर्ण है, जिससे परीक्षा पास कर लेने पर भी विद्यार्थी में वास्तविक कार्य करने की योग्यता नहीं आती। इस त्रुटि का सुधार करने के लिये उन्होंने एक 'व्यापारिक विद्यालय' स्थापित करने का विचार किया और पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर मैल्कम हेली के पास जाकर अपना प्रस्ताव उनके सामने रखा। कुछ समय बाद यह 'व्यापार-विद्यालय' सर मैल्कम हेली के नाम पर ही खोला गया और प्रति वर्ष सैकड़ों छात्र उसमें शिक्षा प्राप्त करके सफलतापूर्वक जीवन-क्षेत्र में प्रवेश करने लगे। श्री गङ्गाराम जी की इन्हीं प्रवृत्तियों को देखकर एक बार मालवीय जी ने कहा था—"शिक्षित बेकारों से जितनी समवेदना लाला गङ्गाराम को है, उतनी शायद ही किसी अन्य व्यक्ति को होगी।"

सन् १९२४ में श्री गंगाराम ने 'हिन्दू विद्यार्थी व्यवसाय-समाज' की स्थापना की। इसकी तरफ से व्यवसायिक संस्थाओं में पढ़ने वाले निर्धन किन्तु सुयोग्य हिन्दू छात्रों के लिये छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती थीं। ये छात्रवृत्तियाँ देश की विभिन्न २५ व्यवसायिक संस्थाओं में बाँटी जाती थीं। आप उन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति नहीं देना चाहते थे जो कोई 'आदरणीय' रोजगार ढूँढ़ते फिरते थे, चाहे उसमें वेतन कम ही मिले। आप यह भी चाहते थे कि ऐसे युवक रोजगार में लगकर उन पर व्यय किये गये धन को लौटा दें, जिससे उसको अन्य उम्मेदवारों की सहायतार्थ लगाया जा सके। इस प्रकार वे थोड़े धन से बहुसंख्यक छात्रों की सहायता करना चाहते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके सेवा-भाव का एक पहलू दीन-दुःखियों का कष्ट निवारण भी था। इसके लिये उन्होंने 'सर गंगाराम चैरिटी डिस्पेन्सरी' की स्थापना की, और कुछ ही समय में इसे पंजाब में सबसे बड़ा धर्मार्थ अस्पताल बना दिया। इसमें आधुनिक वैज्ञानिक प्रणाली के सभी यन्त्र मौजूद थे और लोग कहते थे कि लाहौर में 'मेयो-अस्पताल' के बाद दूसरा नम्बर इसी का है। इसमें किसी जाति या मजहब का व्यक्ति अपना इलाज मुफ्त करा सकता था। आगे चलकर इसके साथ एक पृथक स्त्री-चिकित्सालय भी खोल दिया गया।

जिस समय श्री गंगाराम लाहौर में कालेज की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तब एक छोटा-सा कमरा किराये पर लेकर गुजर करते थे। एक दिन जब उनका ध्यान गणित के एक पेचीदा सवाल को हल करने में लगा था, वे मकान के भीतर बने कुएँ में गिर गये। मकान मालिक के नौकर कालू ने उनको तुरन्त ही बाहर निकाला। वर्षों बाद जब गंगाराम जी एक प्रसिद्ध व्यक्ति होकर हजारों दीन-दुःखियों का उपकार कर रहे थे वह कालू नौकर भी उनके पास आया। अब वह बहुत बुड्ढा और जीर्ण-शीर्ण हो गया था। गंगाराम जी अपने पुराने उपकारी को नहीं भूले थे और उन्होंने तुरन्त ही उसके भरण-पोषण की उचित व्यवस्था कर दी। साथ ही उनको ख्याल आया कि न मालूम ऐसे कितने 'कालू' जराजीर्ण अवस्था के कारण अपना अन्तिम समय भूखे-प्यासे रहकर आहें भरते हुए पूरा कर रहे होंगे। यह विचार आने से उन्होंने कुछ ही समय बाद 'हिन्दू-अपाहिजखाना' की स्थापना की जिससे अनेक आश्रयहीन वृद्धों को अपना अन्तिम जीवन काटने की सुविधा प्राप्त हो गई।

भारतीय कृषि में आधुनिक विधियों का प्रयोग—

अपने देशवासियों की अनेक प्रकार से सेवा करते हुए भी श्री गंगाराम का मुख्य कार्य कुछ और ही था। जैसा वे गाँधी जी, मोतीलाल जी आदि अनेक जन-नायकों से कह चुके थे, उनकी सम्मति में भारत की सबसे बड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समस्या भूखे लोगों का पेट भरने की थी। जो लोग केवल व्याख्यान देकर राजनीतिक आंदोलन से देशोद्धार का स्वप्न देख रहे थे, उनसे वे सदा व्यंगपूर्वक यही प्रश्न करते थे कि—"क्या उनके आन्दोलन से भूखी जनता का पेट भर सकेगा ?" यद्यपि इस सम्बन्ध में कुछ लोग यह कहकर उनकी आलोचना करते थे कि वे 'सरकारी पिट्ठू' हैं, पर इस बात में सचाई बहुत कम थी। निस्सन्देह अपने प्रभाव और पुरानी कारगुजारियों के आधार पर वे बड़े-बड़े सरकारी अफसरों से घनिष्ठ परिचय रखते थे और उनसे सदा मिलते-जुलते थे, पर इसका कारण यह भी था कि वे जनता के हित के लिये कृषि, शिक्षा, उद्योग-धन्धे से सम्बन्धित जिन ठोस योजनाओं को क्रियान्वित करना चाहते थे उनमें बिना सरकारी सहयोग के सफलता पा सकना किसी प्रकार सम्भव न था।

उदाहरण के लिये उनका सबसे बड़ा काम भारतीय कृषि में आधुनिक वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करके देश की उपज को अधिक से अधिक बढ़ाना था। पर यह काम ऐसा था जिसमें कदम-कदम पर सरकारी सहयोग और सहायता की आवश्यकता पड़ती थी। इसकी चर्चा करते हुये 'पुरुषार्थ के पुतले' नामक पुस्तक में कहा गया है—

"श्री गंगाराम के जीवन का वह भाग सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, जहाँ वे ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाते हुए दिखाई देते हैं। यहीं उनका वह पुरुषार्थ दिखाई देता है, जिसकी आज हम सब प्रशंसा करते हैं और जिसके कारण स्वयं गंगाराम जी भी संसार में धन्य बन सके। जिस समय सन् १९०३ में गंगाराम जी ने सरकारी नौकरी छोड़ी, सरकार ने पुरस्कार स्वरूप चिनाव की नहर पर २० एकड़ भूमि प्रदान की। वह भूमि बहुत दिनों से बंजर के रूप में पड़ी थी। वे उसी को उपजाऊ बनाने में लग गये। उन्होंने वैज्ञानिक रीतियों का अवलम्बन करके उस भूमि को इतना अधिक उपजाऊ बना दिया कि देखने वाले आश्चर्यचकित रह गये। उनकी जमीन के पास ही कुछ और वैसी ही बंजर जमीन पड़ी थी। गंगाराम जी ने उस भूमि के लिये सरकार से निवेदन किया तो फिर ५० वर्ग एकड़ भूमि उनको दे दी गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह भूमि पानी के धरातल से बहुत ऊँची थी इसलिये उसमें कोई लाभदायक खेती न हो पाती थी। गङ्गाराम जी ने एक बहुत बड़ी मशीन लगाकर जल को ऊपर उठाया और इन्जिनों की सहायता से समस्त जमीन को जल से तर कर दिया। फिर तो उस बंजर में भी हरे-हरे पौधे लहलहा उठे। सरकार भी इस करिश्मे को देखकर चकित रह गई और बहुत-सी जमीन परीक्षण के लिये और भी दी। इस प्रकार गंगाराम जी के पुरुषार्थ से एक बड़े भूखण्ड में, जहाँ पहले धूल ही उड़ती दिखाई पड़ती थी, अन्न की वर्षा होने लग गई।"

इसमें सन्देह नहीं कि कृषि-उद्योग को नया रूप देकर श्री गंगाराम ने बहुत सम्पत्ति उपार्जन की, और इसीलिये कुछ लोग उन पर आक्षेप करने लग गये। पर एक निष्पक्ष व्यक्ति को उनके कार्य में कोई दोष इस कारण प्रतीत नहीं होता था कि एक तो उन्होंने इस प्रकार जो धन कमाया उसका एक बड़ा भाग सार्वजनिक सेवा के कार्यों में लगा दिया, और दूसरे उन्होंने इस प्रगति-कार्य को अपने तक ही सीमित न रखा, वरन् अन्य लोगों को सदा यह प्रेरणा देते रहे कि वे भी उनका अनुकरण करके लाभ उठायें और साथ ही देश की उपज बढ़ाने में सहायक हों। यद्यपि उस समय लोगों ने उनके कार्य के महत्त्व को नहीं समझा, पर उसके तीस-चालीस वर्ष बाद आबादी बढ़ने से अनाज की जो कमी हुई और भारतवासियों को विदेश से अनाज मँगाकर प्राण-रक्षा करनी पड़ी, उससे यह भली प्रकार सिद्ध हो गया कि समय रहते कृषि-उद्योग की ओर पर्याप्त ध्यान न देकर हमने बहुत बड़ी भूल की थी। श्री गंगाराम का यह कथन कि "सबसे बड़ी राजनीति भूखी जनता का पेट भरना ही" इस समय पूरी तरह से सच होता जान पड़ रहा है।

भूमि-सुधार द्वारा राष्ट्रीय-समस्या का समाधान—

श्री गंगाराम ने हजारों एकड़ ऊसर जमीन को सिंचाई की व्यवस्था द्वारा उपजाऊ बनाकर बड़े-बड़े फार्म स्थापित किये थे। इन जमीनों में से अधिकांश आस-पास बहने वाली नहरों की सतह से कई-कई फुट ऊँची थी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसलिये उनमें कोई फसल अच्छी तरह न होती थीं। सरकारी कर्मचारियों ने स्वयं भी इन जमीनों की सिंचाई के लिये योजनायें बनाईं, पर बड़े अधिकारियों ने खर्च की अधिकता देखकर उनको नामंजूर कर दिया।

पर समस्या इतने से ही नहीं सुलझ सकती थी। यह प्रथम महायुद्ध का जमाना था और सरकार ने पंजाब में हजारों सिपाही कृषि योग्य जमीन दिये जाने का प्रलोभन देकर भर्ती किये थे। पर जब इस संबंध में जाँच-पड़ताल की गई तो मालूम हुआ कि इस प्रकार की फालतू भूमि बहुत ही कम है और जब तक ऊसर भूमि को उपजाऊ न बनाया जायगा तब तक काम न चलेगा। तब एक सरकारी अफसर ने श्री गंगाराम का सहयोग प्राप्त करने का सुझाव दिया कि वे इस कार्य को किफायत के साथ करके सैनिकों के लिये आवश्यक भूमि की समस्या को हल कर सकते हैं। जब इस बात की सूचना श्री गंगाराम को दी गई तो उन्होंने अन्नोत्पादन की वृद्धि को राष्ट्र के लिये हितकारी समझ कर इसे स्वीकार कर लिया।

सरकारी शर्तें काफी कड़ी थीं। श्री गंगाराम को जमीन बहुत थोड़े समय के लिये दी गई थी और यह निश्चित किया गया था कि वे तीन वर्ष बाद उसको उपजाऊ बनाकर मय मशीनों के सिपाहियों को बसाने के लिये सरकार को लौटा देंगे। जनसाधारण की दृष्टि में गंगाराम जी का यह कार्य दिवालिया बन जाने की तैयारी के समान था। पर उनको अपनी सूझ-बूझ और व्यवस्था सम्बन्धी योग्यता पर विश्वास था। इससे उन्होंने जो प्रतिज्ञा की थी वे उस पर डटे रहे। इस सम्बन्ध में उनके जीवनचरित्र के लेखक का कथन है—

"यह एक साहसपूर्ण कार्य था। सरकार को तो विश्वास ही न होता था। कहा जाता है कि इस विषय में पंजाब के फायनेंस कमिश्नर सर जान मेयनार्ड लैफ्टिनेंट गवर्नर से कई बार मिले। कुछ दिनों तक तो वे इस समस्त योजना को ऊटपटाँग समझते रहे, जिससे वे अपने मित्र गंगाराम को बचाना चाहते थे। कदाचित सरकार उनकी पहली एक योजना की तरह इसे भी अस्वीकार कर देती, पर इस अवसर पर वह स्वयं एक कठिन परिस्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में पड़ी हुई थी। आवश्यकता के आगे भला कानून का क्या जोर ? और अन्त में गंगाराम जी की योजना स्वीकार कर ली गई।

कार्य का निश्चय होते ही उन्होंने बड़ी तत्परता से योजना पूरा करने में परिश्रम करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने हर तरह से मितव्ययिता से काम लिया जिससे एक पाई भी व्यर्थ में खर्च न हो। उनको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा, पर उन्होंने सब पर अपने बुद्धिबल से विजय प्राप्त कर ली। साथ ही लड़ाई के कारण अनाज का भाव बहुत मँहगा हो गया, जिससे उनको कृषि की उपज पर काफी लाभ मिला। इसका अधिकांश उन्होंने परोपकार के कामों में खर्च किया।

इस कार्य में सफलता प्राप्त करके दिखला देने पर सरकार का विश्वास उन पर जम गया और फिर उनको ४० हजार एकड़ भूमि ठीक करने को दी गई। इसकी शर्तें पहले की अपेक्षा कड़ी थीं और सरकार बिना एक पैसा भी लगाये सात वर्ष बाद समस्त जमीन पर अधिकार कर लेने वाली थी। यद्यपि यह कार्य अधिकांश लोगों को असम्भव जान पड़ा। पर श्री गंगाराम इस कार्य को केवल एक व्यापार की दृष्टि से ही नहीं देखते थे, वरन् कृषि योग्य भूमि की वृद्धि करने का कार्य उनको समस्त देशवासियों के लिये परम कल्याणकारी जान पड़ता था। इसलिये उन्होंने उस वृद्धावस्था में भी परिश्रम और व्यय की परवाह न करके इस कार्य को ऐसी कुशलता से पूरा कर दिखाया कि सब लोगों के मुँह से 'धन्यवाद' और 'वाह-वाह' के शब्द ही सुनाई पड़ने लगे। स्वयम् पंजाब के गवर्नर ने एक विशाल जनसमूह के सम्मुख कहा—

"श्री गंगाराम ने अपने प्रांत के लिये जो महान काम किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। उन्हें हार्दिक बधाई देने में हमें तनिक भी ईर्ष्या नहीं होनी चाहिये, क्योंकि वे एक वीर की भाँति जीतना ही नहीं जानते बल्कि साधु की भाँति दे डालना भी जानते हैं। मुझे यह सोच कर विस्मय होता है कि इन जैसा नम्र हृदय सज्जन पुरुष व्यापार में इतना चतुर कैसे हो गया ? बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही लम्बे समय तक लोग उनके उदार और कृतज्ञ स्वभाव को नहीं भूलेंगे। हमेशा ही उनका नाम बड़े स्नेह के साथ लिया जायगा।"

यह श्री गंगाराम की अतुलनीय योग्यता और हार्दिक लगन का ही परिणाम था कि वे ऐसी कठिन योजनाओं को फलीभूत बनाने में कृतकार्य हुये। अन्यथा अन्य देशों के उदाहरण को देखते हुये भारत की अंगरेज सरकार ने इस राष्ट्रीय सुरक्षा की योजना के प्रति जो व्यवहार किया उसे उपेक्षणीय ही कहा जा सकता है।

जिस समय सन् १९१७-१८ श्री गंगाराम पंजाब में अपने समस्त साधनों को लगाकर एक राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति में संलग्न थे, उसी समय अमरीका में कैम्पबेल ने भी ऐसी ही भूमि-सुधार की योजना को कार्यरूप में परिणित करने का बीड़ा उठाया था। उन दिनों अमरीका के लाखों व्यक्ति सेना में सिपाही का काम करने और गोला बारूद के कारखानों में मजदूरी करने को चले गये थे, इसलिये वहाँ भी अन्न की कमी पड़ने लग गई थी। इसलिये कैंपबेल ने खाली पड़ी हुई दो लाख एकड़ भूमि में मशीनों से खेती करने की योजना बनाकर सरकार के सामने पेश की। अमरीका के राष्ट्रपति ने उस पर विश्वास करके तुरन्त मंजूरी देदी और बैंकों ने भी उनकी योग्यता को समझ कर बीस लाख डालर (पैंसठ लाख रुपया) कर्ज देना स्वीकार कर लिया।

कैम्पबेल ने अपनी योजना के सम्बम्ध में कहा है कि "इंजीनियरिंग ज्ञान की यदि संसार में कहीं भी सबसे अधिक जरूरत है तो वह 'कृषि-फार्म' ही है। मनुष्य की या घोड़े की (योरोप, अमरीका में पहले घोड़े ही हल जोतते थे) शक्ति बहुत क्षीण है। हमें शीघ्रता और विशाल शक्ति चाहिये—जिसका अर्थ है—मशीनें।" कैम्पबेल ने अपने विश्वास के अनुसार खेती का पूरा काम मशीनों से लिया और कुछ ही समय में एक लाख दस हजार एकड़ बंजर जमीन में लहलहाती गेहूँ की फसल पैदा करके दिखा दी, जिससे करोड़ों व्यक्तियों को रोटी मिल सकने की व्यवस्था हो गई।

जो काम कैम्पबेल ने अमरीका में किया वही श्री गंगाराम ने भारत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में कर दिखाया। उनके पास अमरीका जैसे साधन न थे और न यहाँ की विदेशी सरकार राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर पूरा सहयोग दे रही थी, तो भी उन्होंने अपने साहस, परिश्रम तथा योग्यता से असम्भव काम को सम्भव कर दिखाया और साथ ही अपने अनेक देशवासियों के लिये उसी मार्ग पर चलकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

अमरीका के सबसे प्रसिद्ध मोटर-निर्माता तथा उद्योगपति हेनरी फोर्ड का भी यही कथन है कि आजकल का किसान सब कामों को हाथ से करके बहुत ही कम लाभ उठा पाता है। उनका मत यह है कि "औसत दर्जे का किसान लाभदायक काम में अपनी शक्ति का केवल पाँच प्रतिशत भाग लगाता है इसलिये खेती की पैदावार सस्ती होने पर भी मँहगी पड़ती है। यह सब श्रम व शक्ति का दुरुपयोग है। हम कृषि-फार्म के कार्य को भी एक कारखाने के रूप में चलाते हैं, जिससे उसमें सदैव अन्य किसानों की अपेक्षा बहुत अधिक लाभ रहता है।"

यद्यपि हम व्यक्तिगत रूप से मशीनों के अत्यधिक प्रयोग के पक्षपाती नहीं हैं, पर इस समय संसार में उसी की हवा बह रही है। इसलिये यदि भारत को अन्य देशों की प्रतियोगिता में टिकना है तो उसे भी मशीनों द्वारा खेती के कार्य की पद्धति को अपनाना पड़ेगा। श्री गङ्गाराम ने पचास वर्ष पहले इसी तथ्य को समझाया था।

अन्तिम समय तक आदर्श पर दृढ़—

एक महापुरुष के समान श्री गंगाराम जीवन के अन्तिम क्षण तक अपने आदर्श पर दृढ़ रहे और जैसा महात्मा गाँधी ने लिखा है 'उन्होंने कर्तव्य-पालन करते हुये कर्म-क्षेत्र में ही अपने प्राण दिये। सन् १९२७ में उनको भारत-वर्ष में कृषि-विकास के लिये नियुक्त 'रायल एग्रीकल्चरल कमीशन' का सदस्य बनाया गया। उनको यह सम्मान इसीलिये मिला था कि भारतीय कृषि के सम्बन्ध में जितना व्यवहारिक ज्ञान उनको था वह कहीं अन्यत्र नहीं पाया जा सकता था। उस समय उनकी आयु ७६ वर्ष की हो चुकी थी और शरीर में काफी शिथिलता आगई थी। वे अपनी इस स्थिति को जानते थे, पर भारतीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसानों की कल्याण-कामना से उन्होंने इसे स्वीकार करके लन्दन तक की यात्रा का भार उठाया था। रेल में उन्होंने अपने कुछ मित्रों से कहा—"आपका युवक वर्ग कुछ भी नहीं कर रहा है—आपको वही करना चाहिये जो ईश्वर मुझसे करवा रहा है। मुझे अपनी आयु पर अब भरोसा नहीं रहा, किन्तु फिर भी मैं विदेश यात्रा कर रहा हूँ।"

अपने मित्र सर मैल्कम हेली से विदा लेते हुये भी उन्होंने यही कहा—"अब मैं भारत वापस नहीं लौटूँगा।" इस सम्बन्ध में सर हेली ने लिखा है—"वास्तव में उनके वापस लौटने की सम्भावना बहुत कम थी, किन्तु उन्हें अपने निश्चय से डिगाया नहीं जा सकता था। वे जानते थे कि जिस कार्य को करने का उन्होंने बीड़ा उठाया है, उससे देश का लाभ होगा। स्वयं मुझमें भी उनके रोकने की क्षमता नहीं थी। मेरी तरह उनको भी मालूम हो गया था कि उनकी आयु बहुत कम रह गई है, पर वे अपने अन्तिम क्षण को भी मानवता की सेवा में लगाना चाहते थे।"

वे अपने निश्चय के अनुसार लन्दन पहुँचे और वहाँ रहकर रायल कमीशन के सदस्यों को जो कुछ परामर्श दे सकते थे वह देते रहे। पर उनका स्वास्थ्य निरन्तर निर्बल होता गया और १० जनवरी १९२७ को लन्दन में ही उनका देहावसान हो गया।

एक दिन वह था जब मैट्रिक पास कर लेने पर वे अकस्मात् प्रधान इन्जीनियर की कुर्सी पर जा बैठे थे। उस पर से उठा दिये जाने के कारण उन्होंने उससे भी बड़ा इन्जीनियर बनने की प्रतिज्ञा की और कुछ समय में उसे पूरा करके दिखा दिया। पर वे केवल मकानों, सड़कों और पुलों के बनाने वाले इन्जीनियर ही बनकर नहीं रह गये, वरन् उन्होंने इससे बहुत आगे बढ़कर लाखों लोगों के टूटे-फूटे शरीरों और मन की रक्षा करने और उन्हें उपयोगी मार्ग पर लाने का 'दिव्य-कर्म' भी पूरा किया। उनसे बड़े धनवान तो देश में हजारों पड़े हैं, पर जिनका धन उनकी तरह जरूरतमन्दों के काम आया और अनगिनती लोगों का सहारा बना, वैसे महापुरुष थोड़े ही मिल सकेंगे। ✻✻

युग-निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org